[D] सिन्ध के साथ युद्ध : वल्लभी के युद्ध के बाद हर्ष ने सिन्धु पर आक्रमण किया होगा। बाण के हर्षचरित से पता चलता है कि हर्ष ने सिन्धराज को युद्ध क्षेत्र में मर्दित करके उसकी राजलक्ष्मी को छीन लिया। इससे पता चलता है कि सिन्ध देश का राजा युद्ध में पराजित हो हुआ परन्तु उसका राज्य नहीं छीना जा सका। यह सर्वविदित है कि सिन्ध प्रभाकरवर्द्धन के विरुद्ध था। ह्वेनत्सांग के विवरण से ज्ञात होता है कि उसकी यात्रा के समय सिन्ध एक शक्तिशाली और स्वतंत्र राज्य था।

[E] पुलकेशिन-II के साथ युद्ध : हर्ष और पुलकेशिन-II के युद्ध को अधिक महत्व प्रदान किया गया है। पुलकेशिन-II चालुक्य वंश का शक्तिशाली राजा था। ह्वेनत्सांग उसकी शक्ति एवं प्रभाव की प्रशंसा करता है। हर्ष के विजयों के फलस्वरूप उसके राज्य की पश्चिमी सीमा नर्मदा नदी तक पहुँच गयी। उधर, पुलकेशिन भी उत्तर की ओर राज्य का विस्तार चाहता था। ऐसी स्थिति में दोनों के बीच युद्ध अवश्यंभावी हो गया था। नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ जिसमें हर्ष की पराजय हुई। इस युद्ध के विषय में दो प्रमाण मिलते हैं :-

(1.) ऐहोल अभिलेख के अनुसार, अपार ऐश्वर्य द्वारा पालित सामंतों की मुकुट मणियों की आभा से आच्छादित हो रहे थे, चरण कमल जिसके युद्ध में हाथियों की सेना के मारे जाने के कारण जो भयानक दिखायी दे रहा था, ऐसे हर्ष के आनन्द को उसने (पुलकेशिन ने) भय से विगलित कर दिया।

(2.) ह्वेनत्सांग का यात्रा विवरण, जिसके अनुसार हर्ष ने कई शक्तिशाली राजाओं को पराजित किया, परन्तु 'मो-हो-ल-च-अ' अर्थात् महाराष्ट्र के शासक ने हर्ष की अधीनता स्वीकार नहीं की। ह्वेनत्सांग ने यहाँ जिस राजा का उल्लेख किया है उससे स्पष्टतः तात्पर्य पुलकेशिन से ही है।

'जीवनी' से पता चलता है कि राजा शिलादित्य अपने सेनानायकों की अचूक सफलता तथा अपने कौशल पर गर्व करते हुए आत्मविश्वास के साथ स्वयं सेना का नेतृत्व सम्भालते हुए इस राजा से लड़ने के लिए गया। किन्तु वह उसे पराजित अथवा अधीन बनाने में असफल हो गया। यद्यपि उसने पंचभारत से सेना तथा सभी देशों के सर्वश्रेष्ठ सेनानायकों को एकत्रित किया था।

ऐहोल अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि हर्ष और पुलकेशिन-II के के बीच युद्ध 630 ई० से 634 ई० बीच में हुई थी।

[F] द्वितीय पूर्वी सैनिक अभियान : पुलकेशिन के विरुद्ध हर्ष की असफलता ने उसका नर्मदा नदी के दक्षिण में

[Conti....]

प्रसार रोक दिया। इसके बाद हर्ष ने पूर्वी भारत की विजय के निमित्त एक-दूसरी सैनिक योजना बनायी जिसका उद्देश्य शशांक के राज्य को जीतना था। शशांक के राज्य में – उड़ीसा, बंगाल तथा मगध के प्रदेश सम्मिलित थे। चीनी लेखक मा-त्वान-लिन हमें बताता है कि सर्वप्रथम 641 ई० में हर्ष ने 'मगधराज' की उपाधि धारण की थी। मगध पहले शशांक के राज्य में था।

(Continue ....)

Date: 08/08/2020